गुरु नानक – सबद ३६

राती रुती थिती वार ॥

जपु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ७

राती रुती थिती वार ॥
पवण पाणी अगनी पाताल ॥
तिसु विचि धरती थापि रखी धरम साल ॥
तिसु विचि जीअ जुगति के रंग ॥
तिन के नाम अनेक अनंत ॥
करमी करमी होइ वीचारु ॥
सचा आपि सचा दरबारु ॥
तिथै सोहनि पंच परवाणु ॥
नदरी करमि पवै नीसाणु ॥
कच पकाई ओथै पाइ ॥
नानक गइआ जापै जाइ ॥३४॥

सार: प्रकृति की विविधता दुनिया को चलाने के लिए एक दूसरे का समर्थन करती है। सबके लक्षण अलग होने के बावजूद, अंदरूनी मूल से जुड़े हुए हैं, क्योंकि सब पांच समान आवश्यक तत्वों से ही बने हैं। जब सारे नेक इरादे और सच्ची भावना से एक साथ काम करते हैं, तब सद्भाव पैदा होता है।

राती रुती थिती वार ॥
रात, मौसम, दिन और सप्ताह।

पवण पाणी अगनी पाताल ॥
वायु, जल, आग और पाताल लोक ।

तिसु विचि धरती थापि रखी धरम साल ॥

यह सभी दुनिया के कामकाज को सुविधाजनक बनाने वाले तत्व नेकी के दायरे में मिल कर काम करते हैं।

तिसु विचि जीअ जुगति के रंग ॥

दुनिया विविध प्राणियों से बनी है जिनका जीवन यापन का ढंग और ढब अलग-अलग है।

तिन के नाम अनेक अनंत ॥

यह विविधता असंख्य पहचानों के साथ है।

करमी करमी होइ वीचारु ॥

जो अपने काम और कर्म के अनुसार विचार विमर्श करते हैं।

सचा आपि सचा दरबारु ॥

स्पष्ट चेतना सच्ची सभाओं को ढूंढ़ती है।

तिथै सोहनि पंच परवाणु ॥

स्वयं की अभिव्यक्तां करने वाले शानदार प्राणी पाँच तत्वों से मिल कर बने हैं।

नदरी करमि पवै नीसाणु ॥

कर्मों के अनुसार ही व्यक्ति की पहचान होती है।

कच पकाई ओथै पाइ ॥

कर्मों पर चिंतन के माध्यम से नाज़ुक मन आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त करता है।

नानक गइआ जापै जाइ ॥३४॥

नानक कहते हैं कि आत्म-चिंतन ही मुक्ति का मार्ग है। (३४)

तत्त्व: गुरु नानक कहते हैं कि आत्म-चिंतन और हमारे सच्चे आध्यात्मिक स्वरूप को समझना ज्ञान हासिल करने का पहला क़दम है। स्वयं को एक बड़े, परस्पर जुड़े हुए ब्रह्मांडीय ताने-बाने के हिस्से के रूप में देखने से हमारे काम परोपकारी हो जाते हैं, जिससे आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त होती है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com